IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
Volume 12, Issue 1, December 2019
Impact Factor: 4.819

भारत की उच्चतर शिक्षा

Dr. Harsha Kshirsagar
Principal
B. C. G. Education College, Dewas, Madhya Pradesh

Abstract: भारत में उच्चतर शिक्षा की प्रभावशीलता और उसकी महत्ता, गुणवत्ता व्यक्ति के जीवन का मजबूत आधार बन गई है किन्तु इस उच्चतर शिक्षा को बेहतर बनाने के लिए मानवीय मूल्यों को बचाये रखना अत्यावश्यक है, इसलिए मानवीय मूल्यों में गिरावट होने से ज्ञान की उपयोगिता धीरे–धीरे घटने लगती है क्योंकि मूल्यों के अभाव में ज्ञान उपयोगहीन ही नही बल्कि हमारे समाज व शैक्षिक तंत्र के लिए खतरनाक भी हो सकती है हम इसमें से किसी घटक का आरोप नही कर सकते है यदि सरकार इन आवश्यकताओं को इंगित कर ये समस्याओं का यथोचित समाधान निकालकर उच्चतर शिक्षा की प्राथमिकताओं की आवश्यकता को समझे व इन्हे सुलझाये।

भूमिका :

शिक्षा को जीवन की प्रयोगशाला कहा गया है। शिक्षा ही वह सशक्त उपागम है, जिसके द्वारा व्यक्ति विभिन्न संस्कारों के माध्यम से अपने शरीर, मन और आत्मा का समन्वित विकास कर समाज एवं राष्ट्र का योग्य नागरिक बनता है। नागरिकों को अपनी सम्भावनाओं की सर्वोच्चता पर प्रतिष्ठित करना गुणात्मक शिक्षा का कार्य है। परन्तु वर्तमान शिक्षा प्रणाली राष्ट्र निर्माण से दूर सैद्धान्तिक व सूचनात्मक होती जा रही है। समाज एवं उसकी समस्याओं से सम्बन्ध विच्छेद सा हो गया है। शिक्षा प्रणाली में समग्रता का अभाव सा है। प्राथमिक, माध्यमिक एवं उच्चतर शिक्षा जैसे कई स्तर बन गये है।

शिक्षा की विभिन्न समस्याएं:

1. विश्व अर्थव्यवस्था में कोई भी राष्ट्र शिक्षा और विशेषकर उच्चतर शिक्षा पर ध्यान दिये बिना शीर्ष स्थान नही प्राप्त कर सकता है। देखते ही देखते परमाणु युग, उपग्रह युग और कम्प्यूटर युग आ गया है। शिक्षा या ज्ञान कोई भौतिक वस्तु नही है जिसका हस्तान्तरण किया जा सके। सीखना मूल रूप से व्यक्ति और काफी हद तक सामाजिक प्रक्रिया है जिसको सार्थक बनाने के लिए अध्यापक को अपनी भूमिका में बदलाव लाना होगा। अपनी पारम्परिक भूमिका को भूलकर एक सरल पथ–प्रदर्शक तथा परामर्शदाता की भूमिका निभानी होगी। ''असतो मा सद्गमय, तमसो मा ज्योतिर्गमय, मृत्योर्मामृतं गमय'' अर्थात् शरीर मन बुद्धि और आत्मा मनुष्य के अंग है शिक्षा का उद्देश्य इसका सर्वांगीण विकास करना है।
2. वर्तमान शिक्षा प्रणाली में शिक्षा के मूल्यों को साकार रूप प्रदान करने से विद्यार्थियों का बहुमुखी विकास होता है। उसकी बुद्धि, अभिरूचि, शारीरिक क्षमता, व्यक्तिगत विभिन्नताओं आदि का मापन परीक्षा के द्वारा सम्भव है जो कि उन्हे वर्तमान स्थिति को दर्शाने के साथ–साथ उनमें प्रतिस्पर्धा जगाकर आगे बढ़ने में सहायता देती है।
3. शिक्षा किसी भी राष्ट्र का मेरूदण्ड होती है। यह भूतकाल की उपलब्धियों तथा वर्तमान परिस्थितियों का संधि स्थल ही नही, ऐसा आलोक भी है जिससे भविष्य की रूप–रेखा होती है।''नहि ज्ञानेन सदृशं पवित्रमिह विद्यते'' अर्थात् इस पृथ्वी पर ज्ञान के सदृश दूसरी पवित्र वस्तु नही है।अतः शिक्षक को हम समाज का कर्णधार या प्रगति का सूत्रधार भी कह सकते है। इस प्रकार शिक्षा से तात्पर्य उस प्रक्रिया अथवा उस साधन से है जिसके द्वारा मानव जाति के अनुभवी सदस्य तथा शिशु सदस्यों को जीवन में अपना समायोजन करने में पथ–प्रदर्शन करते है।
4. प्राचीन काल में शिक्षकों के लिए किसी प्रकार के व्यावसायिक प्रशिक्षण की आवश्यकता नही महसूस की जाती थी। शिक्षक का कार्य वही लोग सम्पादित करते थे जो तत्कालीन ज्ञान, विज्ञान के विविध शाखाओं में अपने शिष्यों को दक्षता प्रदान के साथ–साथ उन्हे आध्यात्मिक और धार्मिक कर्तव्यों का पालन करने, कर्तव्य परायण बनाने व चरित्रवान बनाने की प्रेरणा देते थे।
5. मनुष्य को मनुष्य बनाने वाले प्रमुख तत्वों में ज्ञान एक प्रमुख तत्व है।ज्ञान प्राप्त करना ही शिक्षा है। जिस प्रकार ज्ञान का क्षेत्र अति व्यापक है, उसी प्रकार शिक्षा का क्षेत्र भी अतिव्यापक आधार लिये हुए है। प्रसिद्ध यूनानी दार्शनिक

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
Volume 12, Issue 1, December 2019
Impact Factor: 4.819

सुकरात का कहना था कि 'Virtue is knowledge' अर्थात् सदगुण ही ज्ञान है। तात्पर्य यह है कि शिक्षा या ज्ञान प्राप्त करके ही व्यक्ति सद्गुणी बनता है और उसके चरित्र का निर्माण होता है।

6. उच्चतर शिक्षा का उद्देश्य छात्र के व्यक्तित्व का समग्र विकास करना तथा उसे राष्ट्र की की सेवा में एक ऐसी उत्पादक इकाई के रूप में तैयार करना है जो राष्ट्र की आवश्यकताओं और विशिष्टताओं के अनुरूप हो। इस प्रकार उच्च शिक्षा के द्वारा समुदाय एवं राष्ट्र का चहुमुखी विकास होता है जिससे मानवता पर आधारित विकास गतिमान हो और सामाजिक समरसता और सामाजिक न्याय हो बल मिलता है।
7. शिक्षा राष्ट्र का हृदय है उसके निष्पन्द हो जाने पर राष्ट्र जीवन बिखर जाता है यदि किसी राष्ट्र में उच्चतर शिक्षा की व्यवस्था न हो,, में उच्चतर शिक्षा की व्यवस्था न हो, प्रबन्धन न हो, कोई संहिता न हो, कोई उसकी पद्धति न हो, तो राष्ट्र प्रगति पर अग्रसर नही हो सकता। शिक्षा ही एक ऐसा क्षेत्र है जिसमें अतीत की उपलब्धियों का मूल्यांकन होता है।
8. किसी भी देश के शैक्षिक पुनर्निर्माण में सर्वाधिक महत्वपूर्ण स्थान ''शिक्षक'' का है और उच्चतर शिक्षा उस देश की सर्वोत्कृष्ट युवा शक्ति के बौद्धिक विकास का महत्वपूर्ण साधन है। श्रीमद्भगवतगीता ने इसी वैदिक सिद्धान्त का समर्थन किया है। '' आध्यात्म ज्ञान नित्यत्वं तत्व ज्ञानार्थ दर्शनम्''।
9. वैदिक काल में शिक्षक को ''उपाध्याय भी कहा जाता था। उपाध्याय सब विद्याओं में दक्ष नही होता था। वह ज्ञान की एक शाखा का पण्डित हुआ करता था। मुस्लिम काल में कुरान को अल्लाह का सबसे बड़ा शिक्षक कहा गया। इस्लाम दर्शन के अनुसार धर्म, शरीयत और संसार का अधिकतम ज्ञान रखने वाला ही शिक्षक हो सकता था। ''सादा जीवन उच्च विचार'' यह वाक्य इतिहास की वस्तु बन गया। भौतिक परिवेश निरन्तर समृद्ध हो गया, लेकिन आत्मिक शान्ति में हास हुआ। शिक्षक की भूमिका में परिवर्तन हुआ। आज पूरा देश ही नही बल्कि पूरा विश्व मूल्य हास से चिन्तित है। इस सन्दर्भ में शिक्षकों की भूमिका अद्वितीय है। बदलते सामाजिक मूल्यों में शिक्षक की भूमिका में बहुआयामी विस्तार हो चुका है। अन्त में हम कह सकते है कि –

   उच्च शिक्षा की गुणवत्ता में बढ़ा शिक्षक का मान।
   सहयोगी मित्र, मार्गदर्शक बन, करें छात्र कल्याण।।
10. भारत के सन्दर्भ में उच्चतर शिक्षा की स्थिति अच्छी नही है। भारत को अपनी राष्ट्रीय आय के अनुपात में शिक्षा पर कितना खर्च करना चाहिए इसके सन्दर्भ में सन् 1964–66 में डी.एस. कोठारी ने सिफारिश की थी कि हमें राष्ट्रीय आय का 6 प्रतिशत भाग शिक्षा के लिए समर्पित करना चाहिए। परन्तु यह लक्ष्य अभी तक पूरा नही हो सका।
11. हमारे विश्वविद्यालय की शिक्षा प्रणाली अनेक दोषों से युक्त है। आज तक जितनी भी समितियाँ एवं आयोग नियुक्त किये गये है उन सब में मूल्यांकन के स्तर में गिरावट पर प्रकाश डाला गया। 1902 में भारतीय विश्वविद्यालय आयोग का कथन है कि भारत में विश्वविद्यालय शिक्षा का सबसे महान दोष यह है कि शिक्षण परीक्षा के अधीन है न कि परीक्षा शिक्षण के।
12. भारत वह देश है जहाँ नालन्दा, तक्षशिक्षा और विक्रमशिक्षा जैसे विश्वविख्यात विश्वविद्यालय हुआ करते थे, जिनमें विश्व के कोने–कोने से लोग शिक्षा ग्रहण करने के उद्देश्य से आते थे लेकिन यह बात सुदूर की है।अब परिस्थितियाँ सर्वथा भिन्न है। ब्रिटिश के प्रतिष्ठित अखबार ''द टाइम्स'' में वर्ष 2006 में 200 सबसे प्रतिष्ठित संस्थानों की सूची प्रकाशित की थी जबकि सन् 2006 में ''द टाइम्स'' में विश्व के सर्वश्रेष्ठ मात्र 100 विश्वविद्यालयों की सूची प्रकाशित की थी उनमें भारत के किसी भी शिक्षण संस्थान का नाम शामिल नही था जो भारत में उच्चतर शिक्षा की स्थिति को रेखांकित करता है।
13. 21वीं सदी शैक्षिक ध्रुवीकरण का वैज्ञानिक युग है जहाँ सब कुछ ''डब्ल्यू डॉट काम'' में समाहित है। आज मानव ''मानव अंतरिक्ष'' के रहस्य खोलने से लेकर ''मानव क्लोन'' तक विस्मयकारी चमत्कार कर चुका है। भारत को विश्वगुरू अर्थात् ज्ञान की तीसरी आँख कहा जाता था।

उच्चतर शिक्षा के समाधान के उपाय :

उच्चतर शिक्षा की गुणवत्ता पर अनुकूल प्रभाव डालने के लिए आवश्यकता इस बात की है कि–

1. पाठ्यक्रम में आमूल–चूल परिवर्तन किया जाये।
2. मूल्यांकन में उच्चस्तरीय सुधार किया जाये।

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
Volume 12, Issue 1, December 2019
Impact Factor: 4.819

3. शिक्षकों का चुनाव कड़े मापदण्डों के आधार पर किया जाये। नये शिक्षकों की नियुक्ति में कम्प्यूटर दक्षता अनिवार्य हो।
4. शिक्षक–छात्र अनुपात निर्धारित किया जाये।
5. शिक्षकों में डिजिटल प्रशिक्षण हेतु कैरियर एडवान्स कोर्स आयोजित किये जाये जिससे शिक्षकों व छात्रों में पढ़ाई के प्रति रूचि जागृत हो गुणवत्ता बढ़े।
6. पुस्तकालयों का आधुनिकीकरण, प्रयोगशालाओं की सुव्यवस्था के सन्दर्भ में दीर्घकालीन योजनाओं का क्रियान्वयन किया जाये।
7. बौद्धिक परीक्षा के साथ–साथ शारीरीक, मानसिक संवेगात्मक, नैतिक, व्यावसायिक आदि विभिन्न क्षेत्रों की उपलब्धियों का मूल्यांकन किया जाये।
8. पाठ्यक्रम में ''सूचना संसार'' व ''प्रौद्योगिकी साक्षरता'' को अनिवार्य रूप से शामिल किया जाये।
9. निजीकरण द्वारा शिक्षा संस्थाएँ संस्थाओं के रूप में चलायी जायें न कि दुकान के रूप में। सरकार उन पर नियंत्रण रखे, जिससे वे अनैतिक कार्यों से दूर रहें।
10. उच्चतर शिक्षा के गिरते हुए स्तर को ऊँचा उठाने के लिए छात्रों तथा शिक्षकों सभी का सहयोग अपरिहार्य है तथा सरकार को भी छात्रों की सुविधाओं की तरह ध्यान देना चाहिए ताकि वे अपने कार्यक्षेत्र में अधिक रूचि लें और शिक्षा के स्तर को उच्च गुणवत्तापूर्ण बनायें।
11. विश्वविद्यालयों तथा महाविद्यालयों में छात्र संघों एवं छात्र समितियों का निर्माण छात्रों के हितों के लिए किया जाय।
12. किसी भी राष्ट्र का निर्माण वहाँ की भौतिक सम्पदा नही करती है अपितु अच्छे, चरित्रवान तथा सुशिक्षित नागरिक ही किसी राष्ट्र की अस्मिता और विकास का परिचायक होते है। अतः हमें ऐसे नागरिकों का निर्माण करना चाहिए।
13. शिक्षा का मूल्य न बढ़े बल्कि मूल्य आधारिक शिक्षा को बढ़ावा मिले ऐसी शिक्षा की व्यवस्था करनी चाहिए।
14. पूर्व राष्ट्रपति डॉ. ए.पी.जे. कलाम ने कहा था कि, ''यदि हमें 2020 तक विकसित राष्ट्र का स्तर प्राप्त करना है तो उच्चतर शिक्षा में गुणवत्ता बनाये रखना आवश्यक होगा।
15. उच्चतर शिक्षा के गुणात्मक संवर्धन के लिए विश्वविद्यालय अनुदान आयोग शिक्षकों की पात्रता परीक्षा ''नेट'' का आयोजन करने के अलावा विभिन्न विश्वविद्यालयो में अपने पर्यवेक्षकों की नियुक्ति करता है जो समय–समय पर आयोग को अपनी रिपोर्ट भेजते रहते है और विश्वविद्यालय के स्तर को उन्नयन करने के लिए सुझाव देते रहते है।
16. यशपाल कमेटी ने शिक्षा में राजनैतिक हस्तक्षेप रोकने की सिफारिश की है। महाविद्यालयों में प्रवेश के लिए नेशनल टेस्टिंग स्कूल द्वारा प्रवेश दिये जाने की संस्तुति की है।
17. गुरू–शिष्य परम्परा कायम रहे इस हेतु उचित कदम उठाये जायें। अध्यापक अपना कर्तव्य समझे और अध्यापन पर ध्यान दें तथा छात्रों को प्रवेश के समय उसकी सही काउन्सिलिंग करायी जाय तथा उसका मार्गदर्शन कराया जाय।
18. आज के युग में शिक्षा के प्रत्येक पहलू पर विचार करते हुए यह कहा जा सकता है कि दिग्भ्रमित मानव को वेदकालीन शिक्षा ही मार्गदर्शन दे सकती है।
19. हर पाँच वर्ष में पाठ्यक्रम की समीक्षा होनी चाहिए पिछली बार इसकी समीक्षा 1998 में की गयी थी।
20. उच्च शिक्षण संस्थान मात्र छात्रों को डिग्रियाँ ही न बाँटे तथा उन्हे समाजोपयोगी और राष्ट्रोपयोगी नागरिक भी बनायें।
21. उच्चतर शिक्षा का उद्देश्य सदैव ही मानव जाति को उच्च से उच्चतर तथा उच्चतर से उच्चतम पथ की ओर अग्रसर करने का रहा है। डा. आर.के. सिंह ने कहा है कि, ''उच्चतर शिक्षा का केन्द्र मौलिक रूप में मानवीय मूल्यों के संरक्षण, संवर्धन के साथ वैज्ञानिक ज्ञान, अन्वेष्णात्मक अनुसंधान के चेतना केन्द्र के रूप में विकसित होना चाहिए।
22. शिक्षा मानव के लिए उतनी ही आवश्यक है जितना कि वृक्षों के लिए पानी, देखने के लिए नेत्र, सुनने के लिए कान और भुभुक्षा के लिए भोजन। शिक्षा, मानव को वहाँ तक लेकर आती है जहाँ तक वास्तव में वह पहुँच सकता है।
23. नागरिकता की शिक्षा के द्वारा उनमें नागरिकता के गुणों जैसे सच्चाई, ईमानदारी, दया, करूणा, स्नेह, परोपकार, समाजसेवा आदि का विकास होगा जिससे हमारा देश प्रगति के पथ पर अग्रणी होगा।

अन्त में हम प्रो. नन्द चतुर्वेदी के शब्दों में कह सकते है कि शिक्षा के गिरते स्तर के लिए किसी एक घटक को जिम्मेदार ठहराना खण्डित दृष्टिकोण का परिचायक है। चतुर व्यक्ति, अभिभावक, शिक्षक, पाठ्यवस्तु, शिक्षण विधि, परीक्षा प्रणाली जैसे किसी एक या एक साथ कई घटकों को चुनकर उन पर जिम्मेदारी रख देते है और उस व्यवस्था को बचा लेते है जो गिरते हुए स्तर के लिए सही मायने मे जिम्मेदार है। वस्तुतः जीवन मूल्यों में गिरावट ही शिक्षा स्तर में गिरावट है और जीवन मूल्यों में गिरावट वर्तमान व्यवस्था की तर्कसंगति परिणिति है।

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
Volume 12, Issue 1, December 2019
Impact Factor: 4.819

संदर्भग्रन्थ सूची

1. भटनागर, सुरेश, ''आधुनिक भारतीय शिक्षा और उसकी समस्याएँ – आर.लाल. बुक डिपो।
2. पाण्डेय, राम सकल, ''मूल्य शिक्षण'' – विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा।
3. जगरण, दैनिक ''सही दिशा में शैक्षिक सुधार'' दैनिक समाचार पत्र दिनांक 28 जून 2009
4. जगरण, दैनिक ''बदहाल उच्च शिक्षा'' दैनिक समाचार पत्र दिनांक 30 सितम्बर 2008
5. त्यागी, गुरूसरन दास (2004–05) भारतीय शिक्षा का परिदृश्य, विनोद पुस्तक मन्दिर आगरा–2
6. यशपाल समिति रिपोर्ट–2009
7. सिन्हा, नीता और मदनमोहन, ''भारतीय शिक्षा की उदीयमान समस्याएँ''